अभिवृत्ति का प्रदर्शन किया वहीं केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति अत्यंत उच्च पाई गयी। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पुरूष शिक्षकों में नवीन तकनीक के माध्यम से अधिगम के प्रति अभिवृत्ति समग्र रूप से प्राप्त अभिवृत्ति प्राप्तांकों से एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पुरूष शिक्षकों की तुलना में अधिक पाई गयी। अधिगम की नवीन तकनीक के प्रति पुरूष शिक्षकों की अभिवृत्ति के प्राप्तांकों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा संबंधी अभिकरणों को विद्यालयों में नवीन तकनीक अपनाने हेतु विशिष्ट प्रयास करने चाहिए।

सन्दर्भ.

१. बनसोडे सदानन्द वाई (२००८) कोल्हापुर के शिवाजी विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा इंटरनेट का उपयोग: अनालस ऑन लाइब्रेरी एण्ड इंफोर्मेशन साइस वाल्यूम ५५, (२) पृ.सं.१२३—१२६।

२. बिरादर, बी.एस (२००८) विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों का सर्च रंजन द्वारा शोध सूचनाओं से प्रत्येक्षीकरण: लाइब्रेरी हैराल्ड जर्नल वॉल्यूम ४६(१) २००८ पृ.सं.२१—२९।

३. ब्रशटन जोशी, एच (२००९) सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हैल्डरफ प्रकाशन १३१९ एटीन्थ स्ट्रेट एन डब्ल्यू वांशिंगटन डी.सी २०३६—१८०२ वाल्यूम—१०० नं. ३ पृ सं. १२१—१२७।

४. ओबोलवी और अग्निनी (२०१४) इफैक्टिवनेंस ऑफ एनिमेशन एण्ड मल्टीमीडिया टीचिंग आन स्टूडेन्ट्स परफोरनेन्स इन साइन्स सब्जेक्ट ब्रिटेश जनरल ऑफ एज्यूकेशन, सोसायटी एण्ड बिहेव्रीयल साइन्स, ४(२),२०१—२१०।

❑❑❑

44

'भूले बिसरे चित्र' एक अध्ययन

शेख मोहसीन इब्राहीम
शोधकर्ता, सह. अध्यापक,
श्री संत गजानन महाविद्यालय, खर्डा,
तहसिल. जामखेड, जि. अहमदनगर

मुख्य बिंदु : —

प्रास्तविक ।
भगवतीचरण वर्मा का परिचय ।
भूले बिसरे चित्र एक अनुशीलन ।
सारांश ।
संदर्भ ।

प्रास्तविक :—

उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा व्दारा लिखित 'भूले—बिसरे चित्र' यह महाकाव्य उपन्यास है, जो १९५९ ई. में प्रकाशित हुआ और जिसे १९६१ ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । डिमाई ४४० पृष्ठों के उपन्यास का यह संक्षिप्त रुप है । मूल अधिकारिक कथा को ध्यान में रखते हुए इसे संक्षिप्त किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में १८८५ ई. से १९३० ई. तक के परिवेश का चित्रण हुआ है । इसमें चार पीढियों की कथा के माध्यम से देश के गाँव और शहरों का यथार्थ अंकण किया गया है । इसमें टूटते रिश्ते, मध्यवर्ग का उगम एवं पतन, संयुक्त परिवार का विघटन, साम्यवाद का ह्रास, पुंजीवाद का उदय, भातीय राजनीति का बदलता चित्र आदि का जीवंत चित्रण इस उपन्यास में हुआ है ।

भगवतीचरण वर्मा (उपन्यासकार) का परिचय:—

किसी भी कृती को समझने से पहले उसके रचयिता का परिचय आवश्यक होता है । बहुमुखी

प्रतिमासंपन्न साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा का जन्म ३० अगस्त, १९०३ ई. में उत्तरप्रदेश के उन्नाव तहसील के सफीपुर गाँव में हुआ । आपने इलादाबाद विश्वविदयालय से बी.ए., एल.एल.बी. की थी । आप मुख्यत: लेखन एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रीय रहे । इनके पिता देवीचरण कानपुर में वकालत करते थे । भगवतीचरण की प्रारंभिक शिक्षा सफीपुर में हुई । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की ।

भगवतीचरण वर्मा बहुमुखी प्रतिमासंपन्न साहित्यकार थे । 'प्रताप' पत्रिका का संपादन उन्होंने किया । लंबे समय तक उन्होंने रेडिओ पर कार्य संचालन का भी कार्य किया । उपन्यास, कहानी, काव्य, संस्मरण, नाटक, काव्यनाटक, आलोचना, बाल साहित्य आदि अनेक विधाओ पर कलम चलाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध करके उसे नई दिशा प्रदान करने का कार्य भगवतीचरण वर्मा ने किया।

भगवतीचरण वर्मा मूल रुप से उपन्यासकार थे । उपन्यासकार के रुप में ही उन्हे विशेष ख्याती मिली । 'वतन' (१९२८), 'चित्रलेखा' (१९३४), 'तीन वर्ष', 'टेढे—मेढे रास्ते' (१९४६), 'अपने खिलौने', 'भूले बिसरे चित्र' (१९५९) , 'वह फिर नहीं आयी', 'साम्यर्थ और सीमा', 'थके पॉव', 'रेखा', 'सबहि नचावत राम गुसाई' आदि उनके उपन्यास हैं ।

'मोचबिंदी' नामक कहानीसंग्रह उन्होंने लिखा, तो 'मधुकण', 'प्रेमसंगीत' आदि उनके काव्यसंग्रह हैं । 'वसीहत', 'रुपया तुम्हें खा गया', 'सबसे बडा आदमी' उनके नाटक हैं । 'अतीत के गर्भसे' नामक ससंस्करण उन्होंने लिखा, तो 'साहित्य के सिध्दांत' नामक साहित्यालोचन ग्रंथ उन्होंने लिखा । उन्होंने अपने कलम से हिंदी साहित्य को जो सेवाएँ प्रदान की, उसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी, पदमभूषण जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । साथही राज्यसभा की मानद सदस्यता भी उन्हें प्राप्त हुई ।

'भूले बिसरे चित्र' एक अध्ययन :—

सन १९५९ ई. में प्रकाशित और १९६१ ई. में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास भगवतीचरण वर्मा का प्रसिद्ध उपन्यास है । उपन्यासकार ने भारतीय जीवनशैली को चित्रित करने के लिए कायस्थ परिवार की कथा को चुना है । नौकरीपेशा और भ्रमंती के कारण इन लोगों का अनुभव क्षेत्र विस्तृत हो गया है । चार पीढियों की पारिवारिक कथा इस उपन्यास की मूल एवं अधिकारिक कथा है । साथही दो गौण कथाएँ भी कथाविकास में गतिमानता और सहकार्य प्रदान करती हैं ।

मुंशी शिवलाल और उसके तीन पीढियों की कथा मुख्य कथा है । गौण कथाओं में पहली कथा कहार जाति के घसीटे, पत्नी छिनकी और उनके बेटे भीखू की कथा है, तो दुसरी कथा प्रभुदयाल, पत्नी जैदई और उनकी बेटी लक्ष्मी की कथा है । यह गौण कथाए मुख्य कथा के साथ—साथ चलती है और मुख्य कथा के विकास में सहयोग देती है ।

उपन्यासकार व्दारा चित्रित मुंशी शिवलाल और उनके तीन पीढियों के सदस्य भारतीय समाज, व्यवस्था और राजनीति में हो रहे बदलाव और परिवर्तन को अनुभव करने के साथ — साथ परिवर्तन का हिस्सा भी बनते हैं । शिवलाल एक सामान्य परिवार का व्यक्ति है । किंतु अंग्रेज कलेक्टर की चापलुसी करके अपने पढे—लिखे पुत्र को नायब तहसीलदार बना देता है । यह मध्यवर्ग के उत्थान की पहली पक्रिया है । शिवलाल विधुर होने की वजह से उपने भाई राधेलाल के साथ संयुक्त परिवार में रहता है । ज्वालाप्रसाद जब ड्यूटी को जाता है तो उसकी पत्नी जमुना भी उसके साथ जाने की जिद करती है द्य राधेलाल की पत्नी उसका विरोध करती है पर छिनकी शिवलाल को संयुक्त परिवार के परेशानियों को समझाती है और फिर शिवलाल भी मान जाता है । यहाँ संयुक्त परिवार टूटने की शुरवात होती है ।

घाटमपुर के ठाकुर बिरजोर सिंह ठाकुर, गजराज

सिंह और लाला प्रभुदयाल के संघर्ष के माध्यम से सामंतीवाद और पुंजीवाद की लढाई को चित्रित किया गया है । बिरजोर सिंह व्दारा प्रभुदयाल की हत्या के बाद उसकी पन्ती जेदई संपत्ती की मालकिन बन जाती है और नौकरशाही से अपनी साठ–गाँठ बनाने के लिए ज्वालाप्रसाद के साथ अनैतिक संबंध भी बनाती है । यहाँ पर सामंतीवाद पर पुंजीवाद की विजय बदलाते हुए नैतिक मूल्यों के पतन का चित्रण उपन्यासकार ने किया है ।

ज्वालाप्रसाद का बेटा गंगाप्रसाद अपने पिता के चापलुसी के कारण डिप्टी कलेक्टर बन जाता है । वह एक अफसर के रुप में सफल बन जाता है । किंतु यह सफलता और अतिरिक्त सुख–सुविधा उसे विलासी बना देती है । वह मदिरा और कामवासना का आदी बन जाता है । पहले तो वह संतों नामक स्त्रि के साथ अनैतिक संबंध बनाता है, तो बाद में वेश्या मलका के साथ । वह मलका के साथ विवाह रचाना चाहता है, पर समाज में अपनी इज्जत और मानमर्यादा के डर से नहीं कर पाता । मदिरा के वजह से गंगाप्रसाद की अकाल ही मृत्यु हो जाती है ।

प्रस्तुत उपन्यास में भगवतीचरण वर्माजी ने स्वाधीनता आंदोलंन को भी सक्रीय करने का प्रयास किया है । गंगाप्रसाद को स्वाधीनता आंदोलन से सहानुभति थी, पर नौकरी जाने के डर से वह कुछ नहीं कर पाता, पर उसके आगे की पीढी उसका बेटा नवल सक्रीय रुप से स्वाधीनता आंदोलन में कुद पडता है ।

ठाकुर बिरजोर सिंह और लाला प्रभुदयाल के संघर्ष के माध्यम से सामंतीवाद – पुंजीवाद संघर्ष और पुंजीवाद का विजय दर्शाया है । जेदई के माध्यम से विधवा समस्या पर प्रकाश डाल गया है । विदया व्दारा दहेज प्रथा की समस्या को उठाया है द्य श्यामलाल के पत्नी की कथा हिंदु समाज में नारी शोषण की कथा है । शिवलाल,ज्वालाप्रसाद, गंगाप्रसाद के माध्यम से अनैतिक संबंधों का पर्दाफाश किया है । शिवलाल ने नौकरानी छिनकी के साथ, ज्वालाप्रसाद ने जेदई के साथ अनैतिक संबंध बनाये, तो गंगाप्रसाद ने तो सारी हदें ही पार कर दी । मलका के माध्यम से वेश्या समस्या का चित्रण किया गया है । जाफर अली, वहशी, जटिलानंद, अब्दुल हक आदि के माध्यम से सांप्रदायिकता के प्रश्न को उठाया है । इस तरह भूले बिसरे चित्र उपन्यास में लगभग सभी क्षेत्रो और समस्याओं को स्पर्श करने का प्रयास उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा ने किया है । औपन्यासिक तत्वों के आधार पर भी यह उपन्यास खरा उतरता है ।

'भूले – बिसरे चित्र' उपन्यास की भाषा :–

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा सहज, सरल एवं स्वाभाविक है । प्रेमचंद के तरह सरल एवं चलित भाषा का प्रयोग उन्होंने अपने उपन्यास में किया है । आलंकारिता और अतिरिक्त भावुकता का प्रयोग न करके बोलचाल के चलित भाषा रुप का प्रयोग भगवतीचरण वर्मा ने किया हैद्य उनकी भाषा संक्षिप्त रोचक पात्रानुकूल एवं सरल है । समयानुसार अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग भी उसमें हुआ है । भाषा के गठन और लहजे के कारण उपन्यास और भी अधिक रोचक और सार्थक बन गया है ।

सारांश :–

संयुक्त परिवार का विघटन, सामंतीवाद का पतन, अनैतिक संबंध, मूल्यों का ऱ्हास, दहेज प्रथा, नारी शोषण,वेश्या समस्या, विधवा समस्या, सांप्रदायिकता, स्वाधीनता आंदेलन आदि अनेक प्रश्नों और समस्याओं को उठानेवाली भुले बिसरे चित्र एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृती है । वर्माजी के इस उपन्यास में भारत देश का गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और बदलते जीवन मूल्यों का चित्रण किया है और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली है । इसलिए उनके इस उपन्यास को भारतीय भाषाओं के साथ–साथ विश्व के अनेक भाषाओं में अनुवादित भी किया गया । साथही उपन्यास को १९६१ ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सन्मानित भी किया गया ।

संदर्भ :—

१ भूले बिसरे चित्र — भगवतीचरण वर्मा ।

२ hi.m.wikipedia.org/wiki/भूले बिसरे चित्र।

❑❑❑

45

'गोतावळा' आणि 'बारोमास' या कादंबऱ्यातील आशयसूत्र

डॉ. नाना झगडे

सहयोगी प्राध्यापक,

वाघीरे महाविद्यालय सासवड, ता. पुरंदर, जि. पुणे

१९६०च्या नंतर मराठी साहित्यात अनेक साहित्यप्रवाह उदयाला आले. दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, हे साहित्यप्रवाह विशिष्ट समाजगटांची वैचारिक बांधिलकी स्वीकारून प्रकट होत होते. या साहित्यप्रवाहांनी वैचारिक चळवळ बांधत सामाजिक परिवर्तन घडवून आणले. स्वातंर्त्य, समता, बंधुता यासाठी बहुजनसमाज एक होऊन काम करू लागला. याचा परिणाम ग्रामीण जीवनावरही झाला. खेडयातील जीवन हे शेतीशी निगडित असून भारतातील तसेच महाराष्ट्रातील ऐंशी टक्के जनता खेडयात राहते. खेडयातीलगावगाडयाचे वास्तव चित्रण म्हणजे ग्रामीण साहित्यात येऊ लागले. साहित्यातून येणारे चित्रण हे समाजजीवनाशी निगडित असते. शेतीनिष्ठ जीवनानुभव साहित्यातून प्रकट प्रकट होऊ लागले. आनंद यादव यांच्या साहित्यातून ग्रामीण जीवनातील आधुनिकीकरण, यांत्रिकीकरण याचा परिणाम चित्रित होऊ लागला. १९९० च्या नंतर भारतात जागतिकीकरणाचे वारे वाहू लागले. खाजगीकरण, उदारीकरण आणि जागतिकीकरण 'खाऊजा'च्या रूपाने भांडवलदार शोषणाचे नवे पर्याय घेऊन उदयाला आले. या परिवर्तनाचे ग्रामीण जीवनावर परिणाम होऊ लागले. विकासाच्या नवनव्या योजनांच्या घोषणा शोषणाची नवी वारूळं तयार करू लागल्या. 'सेझ' सारख्या गोंडस विकासाच्या नावाखाली शेतकऱ्याला भूमिहीन करायला निघालेली व्यवस्था तयार होऊ पाहते आहे. शेतीवर जगणारी माणसं शेती परवडत नाही म्हणुन आत्महत्या करू लागली. हे